

प्रेषक,

अमिताभ श्रीवास्तव,
अपर सचिव,
उत्तरांचल शासन।

सेवा में,

निदेशक,
संस्कृति निदेशालय,
उत्तरांचल।

संस्कृति अनुभाग

विषय :- बारहवें वित्त आयोग के अन्तर्गत राज्य के संरक्षित एवं संरक्षणाधीन स्मारकों के संरक्षण हेतु
घनावर्तन के सम्बंध में।

वेहरादून दिनांक : 09 जून 2006
सितम्बर, 2006

महोदय,

उपर्युक्त विषयक संस्कृति निदेशालय के पत्र संख्या-1337/स0नि0उ0/पांच-8/2005-06 दिनांक- 27 जनवरी, 2006 के कम में मुझे यह कहने का निदेश हुआ है कि श्री राज्यपाल महोदय बारहवें वित्त आयोग के अन्तर्गत राज्य के संरक्षित एवं संरक्षणाधीन स्मारकों के संरक्षण हेतु निम्नलिखित शर्तों के अधीन तालिका के अनुरूप मन्दिरों/योजनाओं के सापेक्ष वित्तीय वर्ष 2006-07 हेतु रुपये 74.52 लाख (रुपये चौहत्तर लाख बावन हजार मात्र) की वित्तीय एवं प्रशासनिक स्वीकृति प्रदान करते हुए उक्त धनराशि निम्न शर्तों के अधीन व्यय करने की सहर्ष स्वीकृति प्रदान करते हैं।

क्र० सं०	स्मारक/योजना का नाम	(धनराशि लाख रुपये में)	
		प्रस्तावित धनराशि	टी०ए०सी० द्वारा संस्तुत धनराशि
1.	नन्दा देवी मन्दिर समूह बंजिगा, टिहरी गढ़वाल	5.419	5.38
2.	सूर्य मन्दिर समूह पलेठी, टिहरी गढ़वाल	11.699	11.65
3.	राज राजेश्वरी मन्दिर समूह रानीहट, टिहरी गढ़वाल	4.819	4.80
4.	क्याक रैथल मन्दिर समूह, उत्तरकाशी	8.117	8.07
5.	जमदग्नि मन्दिर थान, उत्तरकाशी	12.79	12.72
6.	पौंटी का शिवालय, पौंटी, उत्तरकाशी	8.022	7.98
7.	महासू मन्दिर, गैर, उत्तरकाशी	10.049	9.98
8.	महासू मन्दिर, पुजेली उत्तरकाशी	7.775	7.94
9.	गोविन्द मन्दिर समूह सिमली, घमोली	6.055	6.00
	योग	74.915	74.52

2-कार्य कराने से पूर्व विस्तृत आंगणन/मानचित्र गठित कर नियमानुसार सक्षम प्राधिकारी से प्राविधानित स्वीकृति प्राप्त करनी होगी, बिना प्राविधानित स्वीकृति के कार्य प्रारम्भ न किया जाय।

3-कार्य पर उतना ही व्यय किया जाय जितना कि स्वीकृत नार्म है, स्वीकृत नार्म से अधिक व्यय कदापि न किया जाय।

4-एक मुश्त प्राविधान को कार्य करने से पूर्व विस्तृत आंगणन गठित कर नियमानुसार सक्षम प्राधिकारी से स्वीकृति प्राप्त करना आवश्यक होगा।

5-कार्य कराने से पूर्व समस्त औपचारिकताएं तकनीकी दृष्टि के मध्य नजर रखते एवं लोक निर्माण विभाग द्वारा प्रचलित दरों/विशिष्टियों के अनुरूप ही कार्य को सम्पादित कराते समय पालन करना सुनिश्चित करें।

6-कार्य कराने से पूर्व स्थल का भत्ती-मांति उच्च अधिकारियों एवं भुगर्वैता के साथ अवश्य करा लें। निरीक्षण के पश्चात स्थल आवश्यकतानुसार निर्देशों तथा निरीक्षण टिप्पणी के अनुरूप कार्य किया जाय।

7-उक्त धनराशि का उपयोगिता प्रमाण-पत्र वित्तीय वर्ष के अन्त तक अवश्य उपलब्ध करा दिया जाय।

7-(1) आंगणन में जिन मदों हेतु जो राशि स्वीकृत की गयी है, उसी मद पर व्यय किया जाय एक मद का दूसरी मद में व्यय कदापि न किया जाय। निर्माण सामग्री को प्रयोग में लाने से पूर्व किसी प्रयोगशाला से टेस्टिंग करा ली जाय तथा उपयुक्त पायी जाने वाली सामग्री को प्रयोग में लाया जाय।

2.उक्त स्वीकृत धनराशि इस प्रतिबंध के साथ स्वीकृत की जाती है कि मितव्ययी मदों में आंबटित सीमा तक ही व्यय सीमित रखा जाय। यहां यह भी स्पष्ट किया जाता है कि धनराशि का आवंटन किसी ऐसे व्यय को करने का अधिकार नहीं देता है, जिसे व्यय करने के लिए बजट मैनुअल या वित्तीय हस्त पुस्तिका के निर्णयों या अन्य आदेशों के अधीन व्यय करने चाहिए। व्यय में मितव्ययता नितान्त आवश्यक है। व्यय करते समय मितव्ययता के सम्बंध में समय-समय पर जारी किए गये शासनादेशों में निहित निर्देश का कड़ाई से अनुपालन किया जाय।

3. यदि स्वीकृत राशि में स्थल विकास कार्य सम्भव न हो, तो कार्य कराने से पूर्व विस्तृत आंगणन भानचित्र गठित कर शासन से स्वीकृति प्राप्त करनी होगी, स्वीकृत राशि से अधिक कदापि व्यय न किया जाय।

4. 12वें वित्त आयोग से सम्बन्धित सम्पूर्ण धनराशि का उपयोग दिनांक- 31 मार्च 2007 तक सुनिश्चित कर लिया जाय।

5. इस सम्बंध में होने वाला व्यय चालू वित्तीय वर्ष 2006-07 के अनुदान संख्या-11 के लेखाशीर्षक-2205-कला एवं संस्कृति-00-104-अभिलेखागार (आयोजनागत)-03-बारहवें वित्त आयोग द्वारा संस्तुत अनुदान (पुरातत्व संरक्षण) राज्य अभिलेख-00-29-अनुरक्षण मानक मद के आयोजनागत पक्ष के नामें डाला जायेगा।

6. यह आदेश वित्त विभाग के अर्द्धशासकीय पत्र संख्या-670/XXVII (3)/2006 दिनांक-25. सितम्बर 2006 में प्राप्त उनकी सहमति से जारी किये जा रहे हैं।

भवदीय,

(अमिताभ श्रीवास्तव)
अपर सचिव

पृष्ठांकन संख्या- 122 /VI-I/2006. तददिनांकित।

प्रतिलिपि निम्नलिखित को सूचनार्थ एवं आवश्यक कार्यवाही हेतु प्रेषित।

1. महालेखाकार, लेखा एवं हकदारी, सहारनपुर रोड, देहरादून।
2. निजी सचिव, मा0 मुख्यमंत्री, उत्तरांचल शासन।
3. निजी सचिव, मुख्य सचिव, उत्तरांचल शासन।
4. कोषाधिकारी, देहरादून।
5. वित्त अनुभाग-3, उत्तरांचल शासन।
6. क्षेत्रीय पुरातत्व अधिकारी, क्षेत्रीय पुरातत्व ईकाई, गढ़वाल मण्डल, पौड़ी।
7. एन.आई.सी. उत्तरांचल सचिवालय, देहरादून।
8. वित्त आयोग निदेशालय, उत्तरांचल शासन।
9. गार्ड फाईल।

आज्ञा से

(एस0एस0वल्लिया)
उप सचिव

प्रेषक,

एस0एस0 वल्लिया,
उप सचिव,
उत्तरांचल शासन।

सेवा में,

महानिदेशक
सूचना एवं लोक सम्पर्क विभाग
उत्तरांचल, देहरादून।

संख्या- ०६ /XXII/2006-4(4)/2006

सूचना अनुभाग

देहरादून दिनांक : 12 अक्टूबर, 2006

विषय :- प्रेस क्लब बागेश्वर के भवन निर्माण हेतु धनराशि की स्वीकृति के सम्बंध में।
महोदय,

उपर्युक्त विषयक आपके पत्र संख्या-1395/सू० एवं लो०स०वि०/प्रेस-88/2004 दिनांक 03 अगस्त, 2006 के कम में भुईं यह कहने का निदेश हुआ है कि श्री राज्यपाल महोदय जनपद बागेश्वर में प्रेस क्लब के निर्माण हेतु टी०ए०सी० द्वारा परीक्षणोपरान्त संस्तुत रु० 28.83 लाख (रुपये अट्ठाइस लाख तिरासी हजार मात्र) की प्रशासनिक एवं वित्तीय स्वीकृति प्रदान करते हुए धालू वित्तीय वर्ष 2006-07 में रुपये 20.00 लाख (रुपये बीस लाख) मात्र की धनराशि आहरित कर व्यय करने की सहर्ष स्वीकृति प्रदान करते हैं।

2-उक्त स्वीकृत धनराशि का उपयोग केवल उन्ही मदों में किया जायेगा जिन मदों के लिये यह स्वीकृत किया जा रहा हो। यहाँ यह भी स्पष्ट किया जाता है कि धनराशि का आवंटन किसी ऐसे व्यय को करने का अधिकार नहीं देता है, जिसे व्यय करने के लिये बजट मैन्युअल या वित्तीय हस्त पुस्तिका के नियमों या अन्य आदेशों के अधीन करने से पूर्व सक्षम अधिकारी की स्वीकृति प्राप्त करना आवश्यक होगा। ऐसा व्यय सम्बन्धित अधिकारी की स्वीकृति प्राप्त कर ही किया जाना चाहिए। स्वीकृत व्यय में मितव्ययता नितान्त आवश्यक है। व्यय करते समय मितव्ययता के सम्बन्ध में समय-समय पर जारी किये गये शासनादेशों में निहित निर्देशों का कड़ाई से अनुपालन किया जाय।

3-आंगणन में उल्लिखित दरों का विश्लेषण विभाग के अधीक्षण अभियन्ता द्वारा स्वीकृत/अनुमोदित दरों को जो दरे शिखरूल आफ रेट में स्वीकृत नहीं है, अथवा बाजार भाव से ली गई हो, की स्वीकृति नियमानुसार अधीक्षण अभियन्ता को अनुमोदन आवश्यक है। कार्य कराने से पूर्व विस्तृत आंगणन/मानचित्र गठित कर नियमानुसार सक्षम प्राधिकारी से प्राविधानित स्वीकृति प्राप्त करनी होगी, बिना प्राविधानित स्वीकृति के कार्य प्रारम्भ न किया जाय।

4-कार्य पर उतना ही व्यय किया जाय जितना कि स्वीकृत नार्म है, स्वीकृत नार्म से अधिक व्यय कदापि न किया जाय। कार्य कराने से पूर्व समस्त औपचारिकताएं तकनीकी दृष्टि के मध्य नजर रखते एवं लोक निर्माण विभाग द्वारा प्रचलित दरों/विशिष्टियों के अनुरूप ही कार्य को सम्पादित कराते समय पालन करना सुनिश्चित करें।

5-कार्य कराने से पूर्व स्थल का भली-भांति निरीक्षण उच्चाधिकारियों एवं भुगर्वदेत्ता के साथ आवश्यक करा लें। निरीक्षण के पश्चात स्थल आवश्यकतानुसार निदेशों तथा निरीक्षण टिप्पणी के अनुरूप कार्य किया जाये।

6-यहाँ यह भी स्पष्ट किया जाता है कि इन योजनाओं हेतु पूर्व में धनराशि स्वीकृति न हुई हो। इस हेतु सम्बन्धित आहरण वितरण अधिकारी पूर्ण रूप से उत्तरदायी होगा।